यू0पी0वी0यू0

डॉ0 शकुन्तला मिश्रा विश्वविद्यालय, मोहान रोड, लखनऊ।

प्रेस नोट

बधिरों के लिए शिक्षा जरूरी

''भारत में बधिर लोगों के लिए शिक्षा बेहद जरूरी है।'' यह बात अन्तरराष्ट्रीय सांकेतिक भाषा एवं बधिर अध्ययन संस्थान सेन्ट्रल लंकाशायर, यू0के0 की निदेशक प्रो0 उलरिक जीशान ने 'बधिर लोगों के लिए उच्च शिक्षा की पहुॅच' विषय पर आयोजित व्याख्यान में कही। इस व्याख्यान का आयोजन उ0 प्र0 वि0 उ0 डा0 शकुन्तला मिश्रा विश्वविद्यालय द्वारा किया गया। प्रो0 जीशान ने जोर देते हुए कहा कि जब तक बधिरों को सांकेतिक भाषा के जरिये शिक्षा नहीं दी जाती तब तक उन्हें समाज की मुख्य धारा से जोड़ना मुश्किल है। बधिरों को स्वावलम्बी बनाने के लिए जरूरी है कि उन्हें उच्च शिक्षा की विभिन्न विधाओं में पढ़ने का अवसर दिया जाये। प्रो0 जीशान ने कहा कि भारत में दो मिलियन लोगों द्वारा ही सांकेतिक भाषा जानी जाती है। जबकि जरूरत इस बात की है कि बधिर बच्चों की शिक्षा के लिए सांकेतिक भाषा जानने वालों की संख्या बढ़ायी जाए। इसके बिना बधिरों की शिक्षा की बात करना बेइमानी है। उन्होंने जोर देकर कहा कि भारत बधिर अध्ययन के लिए एक अच्छा ''हब'' बन सकता है। इसके लिए जरूरी है कि सरकार समुचित कदम उठाये। उन्होंने कहा कि सांकेतिक भाषा की जानकारी के अभाव की वजह से बधिरों की उच्च शिक्षा की पहुंच नहीं हो पा रही है। प्रो0 जीशान ने डा0शकुन्तला मिश्रा विश्वविद्यालय द्वारा मूक बधिरों की शिक्षा के लिए किये जा रहे प्रयासों की सराहना की।

इस अवसर पर बोलते हुए विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता (शैक्षणिक) प्रो0 ए0 पी0 तिवारी ने कहा कि भारत में 1.8 फीसदी आबादी बधिर है और दुनिया के चार फीसदी बधिर भारत में रहते हैं। मूक बधिरों के लिए शिक्षा के ठोस इंतजाम द्वारा देश की तरक्की में उनके योगदान को बढ़ाया जा सकता है।

अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री एस0 के0 श्रीवास्तव ने कहा कि बधिर अध्ययन शिक्षा की एक नयी शाखा के रूप में हाल के वर्षो में तेजी के साथ उभर कर सामने आया है, उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में समुचित अनुमोदन के बाद जल्द ही सांकेतिक भाषा अध्ययन केन्द्र की स्थापना कर ली जाएगी। इस केन्द्र के जरिये सांकेतिक भाषा की जानकारी के लिए शिक्षण–प्रशिक्षण एवं अनुसन्धान की व्यवस्था होगी।

डा0 मृत्युन्जय मिश्र ने व्याख्यान के उद्देश्यों के बारे में बताया। डा0 अर्जुन प्रसाद ने कार्यक्रम का संचालन तथा डा0 अरविन्द शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस मौके पर विश्वविद्यालय के शिक्षक, सहायक कुलसचिव श्री बृजेन्द्र सिंह तथा विद्यार्थी मौजूद थे।